ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-3* April- 2021
Innovation The Research Concept

यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' के उपन्यासों में सामाजिक चेतना एवं शोषण के विरूद्ध संघर्ष

The Struggle against Social Consciousness and Exploitation in the Novels of Yadvendra Sharma 'Chandra'

Paper Submission: 05/04/2021, Date of Acceptance: 22/04/2021, Date of Publication: 25/04/2021

नरेश कुमार
शोधार्थी,
हिंदी विभाग,
सिंघानिया विश्वविद्यालय,
पचेरी बड़ी, झुंझुनू,
राजस्थान, भारत

सारांश

यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' एक सशक्त उपन्यासकार रहे हैं। उनका बहु आयामी व्यक्तित्व एवं कृत्तित्व प्रतिभा सम्पन्न साहित्यकार के रूप में विख्यात है। उपन्यास साहित्य में मनुष्य जीवन के सभी पक्षों का यथार्थ चित्रण होता है। उपन्यासकार उपन्यास में विविध परिवेशों का चित्रण करता है। यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' एक सशक्त उपन्यासकार रहे हैं। उनका बहु आयामी व्यक्तित्व एवं कृत्तित्व प्रतिभा सम्पन्न साहित्यकार के रूप में विख्यात है। आज के समय में उपन्यास समाज का यथार्थ दर्पण है। उपन्यास के माध्यम से उपन्यासकार समाज में हो रहे संक्रमण एवं बदलाव को चित्रित करता है। आज उपन्यास एक प्रभावशाली विधा होने के साथ–साथ समसामयिक व सदियों से चले आ रहे विभिन्न आडम्बरों को भी उद्घृत करता है।

Yadavindra Sharma 'Chandra' has been a strong novelist. His multi-dimensional personality and work is noted as a genius-rich litterateur. In novel literature, there is an accurate depiction of all aspects of human life. The novelist portrays diverse environments in the novel. Yadavindra Sharma 'Chandra' has been a strong novelist. His multi-dimensional personality and work is noted as a genius-rich litterateur. In today's time, the novel is a real mirror of society. Through the novel, the novelist portrays the transition and change happening in the society. Today, the novel is an influential genre, as well as the contemporary and various fetters that have been in existence for centuries.

मुख्य शब्द : चेतना, शोषण,उपन्यासकार, सामाजिक व्यवस्था।
Conscious Exploitation, Novelist, Social Order

प्रस्तावना

हिन्दी एवं राजस्थानी साहित्य में सामाजिक चेतना एवं शोषित वर्ग के विमर्श को लेकर अनेक विधाओं में साहित्य सर्जन हुआ है। जिसमें उपन्यास एक महत्त्वपूर्ण विद्या ळें यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' एक सशक्त उपन्यासकार रहे हैं। उनका बहु आयामी व्यक्तित्व एवं कृत्तित्व प्रतिभा सम्पन्न साहित्यकार के रूप में विख्यात है। उन्होंने उपन्यास, कहानी, नाटक, लघुकथा, पटकथा संवाद, संस्मरण, एकांकी आदि विविध विद्याओं में सार्थक प्रभावशाली एवं क्रांतिकारी सृजन किया है। उन्होंने अपने उपन्यासों में सामाजिक असमानता, भेदभाव, सामंती अत्याचार और नारी–शोषण का चित्रण किया है। उपन्यास साहित्य में मनुष्य जीवन के सभी पक्षों का यथार्थ चित्रण होता है। उपन्यासकार उपन्यास में विविध परिवेशों का चित्रण करता है। आज के समय में उपन्यास समाज का यथार्थ दर्पण है। उपन्यास के माध्यम से उपन्यासकार समाज में हो रहे संक्रमण एवं बदलाव को चित्रित करता है। आज उपन्यास एक प्रभावशाली विधा होने के साथ–साथ समसामयिक व सदियों से चले आ रहे विभिन्न आडम्बरों को भी उद्घृत करता है। लम्बे समय से सामंती व्यवस्था में निम्नवर्ग का शोषण होता आया है। जिसका चित्रण यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' ने बखूबी किया है। चूंकि वे स्वयं राजस्थान के बीकानेर के रहने वाले थे। अतः उन्होंने इस व्यवस्था को अत्यन्त निकट एवं प्रभावी रूप से देखा था। इसलिए उनका लेखन अत्यधिक सटीक

एवं प्रभावोत्पादक बन पड़ा है। उनके विषय की समग्रता एवं वर्तमान संदर्भ में सामाजिक न्याय एवं समानता के लिए इस विषय का चयन मुझे उचित लगा।

महत्त्व

मानव प्रकृति की सर्वश्रेष्ठ रचना है। जिसके स्वभाव में ही ललित कलाओं का स्थान रहा है। लेकिन साथ ही साथ सामाजिक रूप से वर्गीकरण की अवधारणा का अस्तित्व भी रहा है। जिसके कारण दो मनुष्य हाड–मास एवं आत्मा के स्तर पर एक होते हुए भी विभिन्न वर्गों में विभाजित कर दिए गए। भारतीय सामाजिक व्यवस्था में वर्ण विभाजन और जातीय भेद मुखर रहा है। जिसका प्रभाव भारतीय समाज पर दिखाई देता है। यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' ने इस व्यवस्था के खिलाफ बहुत मुखर आवाज उठाई और शोषित वर्ग को एक नई दिशा देने का प्रयत्न किया। इनकी रचनाओं में सामंती व्यवस्था के खिलाफ एक सशक्त विरोध प्रदर्शित होता है।

उद्देश्य एवं परिकल्पना

हिन्दी के सशक्त रचनाकारों की पीढ़ी में यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' का नाम अग्रणी है। उन्होंने अनेक विषयों एवं विविध विद्याओं में लेखन कर अपनी बहुमुखी प्रतिभा का परिचय दिया है। उन्होंने कहानी, नाटक, उपन्यास, एकांकी, संस्मरण, बाल साहित्य आदि के साथ–साथ फुटकर एवं स्वतन्त्र लेखन भी किया है। उनके उपन्यास साहित्य में सामंती परिवेश, वर्ग विभाजन, छुआछूत व वंचितों का शोषण स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है अर्थात् उनके उपन्यासों का केन्द्र बिन्दु सामाजिक चेतना एवं शोषण के विरूद्ध संघर्ष है। उनकी कलम समाज के उस अन्तिम व्यक्ति के लिए उठी जिसको अछूत तथा परित्गय माना जाता था। इसलिए मेरे शोध का विषय ''यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' के उपन्यासों में सामाजिक चेतना एवं शोषण के विरूद्ध संघर्ष'' का विश्लेषण करना तथा इसके माध्यम से सामाजिक समरसता का भाव जगाकर राष्ट्रीय एकता में योगदान देना, इसका मूल उद्देश्य है।

यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' के उपन्यासों में प्रतिबिम्बित नारी

पुरूष प्रधान समाज व्यवस्था में धर्म व शिक्षा की अज्ञानता की वजह से नारी को हमेशा दोयम दर्जा दिया गया। नारी की व्यथा जन्म के साथ ही शुरू हो जाती है और उसके जन्म पर उतनी खुशियाँ नहीं मनाई जाती, जितनी लड़के के जन्म पर मनाई जाती हैं। लड़की को मां–बाप द्वारा बोझ समझा जाता है। प्राचीन काल से ही नारी जीवन संघंर्षमय रहा है। पुरूष प्रधान समाज में नारी को केवल वासनापूर्ति का साधन समझा गया और उसका दायित्व माना गया कि वह अत्याचारों को चुपचाप सहती सहे। शोध छात्रा ने उपर्युक्त विषय पर यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' के उपन्यासों में चित्रित नारी पात्रों को बहुत ही गहराई से प्रस्तुत किया है और नारी जीवन के मूल्य विघटन, संघंर्ष, सुचिता, साहस, विद्रोह, प्रणय, वात्सल्य, क्रोध व दीनता के पक्षों का सुक्ष्म विशद विश्लेषण किया ळें

यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' के उपन्यासों में चित्रित सामंती जीवन

चूंकि यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' का बचपन बीकानेर में बीता और उन्होंने सामन्ती परिवेश को बहुत नजदीक से देखा था। अतः उनकी लेखनी पर सामन्ती जीवन का बहुत ही गहरा प्रभाव पड़ा।

यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' का उपन्यास साहित्य

यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' के उपन्यासों में वर्णित समाज के विभिन्न पक्षों, विशेष रूप से नारी संघर्ष तथा गरीब वर्ग के जीवन के विभिन्न पहलुओं का सूक्ष्म विश्लेषण किया।

यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' व्यक्तित्व और साहित्य

यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' के व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं को उजागर किया तथा उनके जीवन का साहित्य पर पड़े प्रभाव को भी उल्लेखित किया।

यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' की कहानियों में नारी पात्र

नारी जीवन के विविध पक्षों का यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' की कहानियों के आधार पर आलोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया। उन्होंने नारी संघर्ष और उसकी अस्मिता को विभिन्न आयामों के आधार पर विश्लेषित किया।

निष्कर्ष

वास्तव में आधुनिक युग में भी किसी न किसी रूप में शोषण व वर्ग विभेद दिखाई देता है। जो हमारी राष्ट्रीय एकता, अखण्डता व विकास के लिए एक नासूर का काम करता है। जब तक भारतीय समाज में समानता व सामाजिक न्याय की अवधारणा विकसित नहीं होगी, तब तक भारत वास्तविक रूप से महाशक्ति नहीं बन सकता। इसलिए यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' द्वारा उल्लेखित सामाजिक न्याय व शोषण के विरूद्ध संघर्ष को शोध के रूप में चयन करना प्रासंगिक बन जाता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *त्रिपाठी विश्म्बरनाथ – स्वतन्त्रता व संस्कृति।*
2. *गुलाब राय – भारतीय संस्कृति की रूपरेखा।*
3. *'चन्द्र' यादवेन्द्र शर्मा –ढोलन कुंजकली।*
4. *'चन्द्र' यादवेन्द्र शर्मा – चांदा सेठानी।*
5. *शर्मा डॉ. मोहिनी – हिन्दी उपन्यास और जीवन मूल्य।*
6. *यशपाल–शोषक श्रेणी के प्रपंच : गांधीवाद की शव परीक्षा।*
7. *'चन्द्र' यादवेन्द्र शर्मा – हजार घोडो पर सवार।*
8. *प्रो. हुमायु कबीर – हजारो परम्परा।*
9. *पानेरी, हेमेन्द्र कुमार – स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास।*
10. *शर्मा एस. आर. – आधुनिक भारत निर्माण।*
11. *नागर अमृत लाल – बूंद और समुद्र।*
12. *यशपाल –झूठा–सच।*
13. *आचार्य नरेन्द्र देव – राष्ट्रीयता और समाजवाद।*
14. *'चन्द्र' यादवेन्द्र शर्मा – प्रजाराम।*
15. *'चन्द्र' यादवेन्द्र शर्मा – बहुरूपिया।*
16. *'चन्द्र' यादवेन्द्र शर्मा – गुलाबड़ी।*
17. *डॉ. श्री नाथसहाय – सफेदपोश : भारतीय मध्यमवर्ग एक समाज शास्त्रीय अध्ययन।*
18. *वर्मा धीरेन्द्र – हिन्दी साहित्य कोश।*
19. *भूपेन्द्र भूप सिंह – मध्यवर्गीय चेतना और विकास।*